International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 03(II), July - September, 2022, pp. 231-236

उत्तराखंड के सीमान्त पर्वतीय क्षेत्र के भोटिया जनजातियों के प्रवास के परिप्रेक्ष्य में

राकेश सिंह फकलियाल*

प्रस्तावना

पूरे भारत वर्ष मे 427 जनजातियाँ निवास करती हैं। ये जनजातियाँ अपनी संस्कृति, भाषा और इतिहास के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। भारतीय संविधान की धारा 36 (25) के अनुसार संवैधानिक आधार पर जनजातियों से तात्पर्य उन जनजातियों या जनजाति समुदायों या उनकी किसी उप जनजाति या उप जनजातिय समुदाय से हैं। जो संविधान की धारा 342 में वर्णित हैं। अनुसूचित जनजातियों को कभी–कभी सामान्य तौर पर अन्य कई नामों से भी पुकारा जाता हैं, जैसे पहाड़ी जातियाँ (Hill Tribe), वन्य जनजातियां (Forest Tribe), आदिवासी जातियाँ (Adivasi), (मीना 2019) आदि। इसी क्रम में उत्तराखंड राज्य में भी मुख्य रूप से पांच जनजातियाँ बोक्सा, राजी, थारू, जौनसारी एवं भोटिया निवास करती हैं।

प्रस्तुत शोध पत्र में भोटिया जनजाति के प्रवास के विषय पर शोध किया गया हैं। उत्तराखंड में जौनसारी जनजाति समुदाय का मुख्य रूप से अधिकतम भाग और फिर भोटिया जनजाति समुदाय का हैं। उत्तराखंड में भोटिया जनजातियाँ सुदूरवर्ती सीमान्त बर्फीले पर्वतीय क्षेत्र के चमोली, उत्तरकाशी, पिथौरागढ़ एवं

* डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर–सिदो–कान्हु–मुर्मू दलित एवं जनजातीय अध्ययन केंद्र, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।

बागेश्वर जिले में निवास करती हैं। यह भोटिया गाँव उत्तराखंड के भव्य पर्वत श्रृंखला नंदा देवी, हाथी पर्वत, त्रिशूल, मिलम, पिंडारी, पंचाचूली, द्रोणागिरी एवं आदि छोटा केलाश की पर्वतीय छठाओं से घिरा हैं (चित्र सं.–1, 2)। ठंडी शीतलहर का अवागमन इस बर्फीली पहाड़ियों में लगातार बना रहता हैं और इन पर्वतो की तलहटी के ओत प्रोत ही भोटिया प्रवास स्थित हैं। ये क्षेत्र समुद्रतल से 2100–3000 मीटर की उच्चतम ऊँचाई एवं न्यूनतम तापमान में होने के कारण, इन भोटिया जनजातियों का जीवन बहुत संघर्षपूर्ण एवं कठिन हैं। सड़क, यातायात सुविधा, आवागमन के लिए संसाधनों की भारी कमी, मेडिकल सुविधा की कमी, भौतिक सुख साधनों की कमी के बाद भी, ये लोग अपनी संस्कृति एवं परम्पराओ के बल पर, अपनी कम सुविधा पर भी अपना सोहार्द भाव से सरल जीवन का आनंद लेते हैं।

हिमालयी प्राचीन जातियों के सामाजिक–सांस्कृतिक विन्यास को अभी तक इन जन जातियों ने सुरक्षित व संरक्षित रखा हुआ हैं। जो अमूल्य धरोहर के रूप में आने वाली पीढ़ी एवं गतिशील समाज में एक आधार स्तभ व अग्रदूत की भूमिका निभाती हैं। किसी भी स्थान व जाति विशेष की पहचान उसके व्यक्तित्व से होती हैं। उत्तराखंड में भोटिया जनजातियाँ अपनी विशिष्ट परम्पराओ, ऊनी पहनावा, खान–पान, अनमोल आभूषण, पशुपालन, खेती एवं अलौकिक संस्कृति से अपनी अभिन्न छवि बनाये हुए हैं, जो कि पूरे उत्तराखंड में ही नही अपितु पूरे देश में अपनी अलग पहचान बनाये हुए हैं (फकलियाल एवं रावत 2015)। भोटिया जनजाति के दो आवासीय स्थलों में अपने पालतू पशुओं सहित वर्ष में एक बार आना और एक बार जाना 'कुन्चा' कहलाता हैं (सिंह 2018)। दूसरे शब्दों में भोटिया समाज के ग्रीष्मकालीन प्रवासीय क्षेत्रों को 'ऐर' या 'सौसा' या 'मसमा'या 'कुन्चा' कहा जाता हैं और शीतकालीन प्रवासीय क्षेत्र को के लिए 'पाण' कहा जाता हैं। ग्रीष्मकालीन प्रवास उच्च हिमालयी क्षेत्रो के भौगोलिक रूप की जलवायु शुष्क रहती हैं। न्यूनतम शुष्कता एवं पर्वतीय धरातल पर कृषि कार्य दुरूह हैं, फिर भी इन भोटिया जन जातियों द्वारा विषम परिस्थिति में कठिन परिश्रम द्वारा कृषि कार्य किया जाता हैं। इसके अतिरिक्त चारागाह क्षेत्र (बुग्याल) के कारण, बुग्याल को अंग्रेजी में 'Alpine region' कहा जाता हैं। यहाँ के निवासियों को पशु चारण की प्रकृति प्रदत्त सुविधा हैं। इस 'Alpine region' मे कई औषधिय पौधों एवं जड़ीबूटीयों को भी इनके द्वारा एकत्र किया जाता हैं और इसका पारम्परिक ज्ञान शक्ति स्वरुप इनको प्राप्त हैं (फकलियाल) ये भोटिया जनजाति अपने पशुओं जैसे घोड़े, जुप्पू गाय, खच्चर, भेड़, बकरी, गाय इत्यादि को चारण हेतु छोड देते हैं (चित्र स०–3) इस स्वच्छ प्रकृतिक चारण से पशुओं द्वारा प्राप्त भोजन दूध, मास एवं अंडा प्रचुर मात्र में प्रोटीनयुक्त एवं शुद्ध होते हैं।

चित्र सं.-3

उत्तराखंड के दो मंडलों प्रथम गढ़वाल मण्डल एवं द्वितीय कुमाऊ मण्डल में, भोटिया जनजाति में तोल्छा, मार्छा, शौका रं एवं जौहार (चन्पा) मुख्य हैं। जिसमें से तोल्छा एवं मार्छा गढ़वाल मण्डल तथा शोका एवं जौहार कुमाओं मण्डल में निवास करते हैं। गढ़वाल मण्डल के तोल्छा एवं मार्छा के लिए रोंग्पा शब्द का प्रयोग किया जाता हैं। शौका समुदाय को 'रं' एवं जौहार समुदाय को 'चंग्पा' भी कहा जाता हैं। यह सभी भोटिया जनजाति के अन्तर्गत आते हैं।

इन सभी भोटिया जनजातियों में अधिकतर अवजन–प्रवजन प्रथा जिसे अंग्रेजी में migration (माइग्रेशन) कहा जाता हैं, आदिकाल से प्रचलन हैं। यह प्रथा वर्षो जो गैरजनजातीय लोंगो से भिन्न संस्कृति का एक जीता जागता उदाहरण हैं जो वर्तमान में भी परिलक्षित हैं। भोटिया भाषा में अवजन–प्रवजन प्रथा में ग्रीष्मकालीन प्रवास को 'ऐर' या 'थो' (ऊपर) कुन्चा या मसमा कहा जाता हैं। जबकि शीतकालीन प्रवास को यो (नीचे) या पाण कहा जाता हैं (अमटीकर 2014). यह परम्परा भोटिया समाज में वास्तविक रूप से प्रचलित हैं। यह परम्परा एक निश्चित भू–भाग जो एकांत में हो, खानाबदोश जीवन, भोटिया समाज के अनुकूल वातावरण एवं मधुर जीवनशैली के लिए प्रचलित हैं। उत्तराखंड में भोटिया जनजाति पहाड़ी जातियाँ (Hill Tribe) के अंतर्गत चमोली, पिथौरागढ़ एवं बागेश्वर जिले में निवास करती हैं। ये छः माह के लिए शीतकालीन एवं ग्रीष्मकालीन स्थानों में प्रवास करते हैं। शोध के माध्यम से भोटिया गाँवो की ग्रीष्म एवं शीत कालीन प्रवास सूची को सूचीबद्ध किया गया हैं। सूची अनुसार कुल गढ़वाल के 50 गाँवो का ग्रीष्मकालीन प्रवास होता हैं जबकि लगभग 17 ग्राम वर्ष भर एक स्थान मे रहते हैं इसी प्रकार कुमाऊ मण्डल में 37 गाँवों से प्रवास हेतु ये भोटिया जनजाति जाती है जिसमें 7 गाँव वर्ष भर एक स्थान पर रहते हैं।

दारमा घाटी के सेला से लेकर सीपू तक तक़री बन 30 किलोमीटर की दुरी तक फैलाए गाँव के लोग कुन्चा आते–जाते हैं। ये लोग अक्टूबर–नवम्बर मे दारमा से गर्म स्थान में बसे अपने गाँव गलाती, बलुवाकोट (घाटीबग्गड़) गलाती, निगाल्पानी, कालिका, अर्स्यैंगरा, घाटीबग्गड़, गोठी, छारछम, जोलजीबी, धारचूला, आते हैं तथा अप्रैल–मई में दारमा के मूल गाँव दर, दांतू, गौ, ढाकर, तिदांग, मारछा, सीपू, सेला, चल, फिलम, सौन, दुग्तु, नागलिंग, बालिंग, बोने, मार्चा तथा पिजम लौटते हैं। यही क्रम साल दर साल चलता रहता हैं। कुन्चा का वर्णन करते हुए श्रीमती विद्या सोनाल अमटीकर में लेख द्वारा 1970 के दशक में इस हेतु कहा है कि कुन्चा हेतु पूरे परिवार समूह में साथ जाना किसी पिकनिक से कम नही था कुन्चा जाने की तैयारी तक़रीबन एक महीने तक चलती थी छः माह का राशन, रास्ते के लिए विशेष सत्तू सामल" को बकरियों में लादने के लिए फाँचा (कारखा) मे भरना, कपड़ो को बैल, जुब्बू में लादने के लिए विशेष थैली तबर में भरना, जुब्बू–बैल का यगा (शीत प्रदेश की बैल की प्रजाति), घोड़ो का शैतान–बटन (त्यागा), सामानों को जानवरों मे लादते समय बाधने और कसने के लिए रस्सियाँ (थक्पा–कसने तथा बाधने का रस्सा को टायर करना आदि दारमा घाटी के कुन्चा विषय में बताया गया हैं।

भारत की लगभग पौने चार करोड़ जनजाति की जनसँख्या का करीब 90 प्रतिशत भाग खेतीहार हैं. इन भोटिया जनजातियाँ सीमान्त पर्वतीय क्षेत्र समुद्रतल से 7500 फुट से शुरू होकर 18000 फुट तक की ऊँचाई तक विस्तृत हैं। सीमान्त चेत्रो के पर्वतीय ढलानों के सीड़ीनुमा खेतों में यह भोटिया जनजातियां मुख्य रूप से खेती करती हैं (चित्र स०–4)। जिसमें आलू, फाफर, राजमा (छेमी), मूली, मूला, शलजम, मटर, बंद गोभी, शाही जीरा, फरण, कुट्टू, मसूर, ककड़ी, धनिया, हरी मिर्च, लहसून, सेब, आड़ू, खुबानी (चूली), नाशपाती, एवं अखरोट इत्यादि की फसल उगाई जाती हैं। इतना ही नही, यहाँ पर ये लोग कठिन परिस्थितियों में बिना संसाधनों के मानव संसाधनों के द्वारा कृषि कार्य, पशुपालन एवं लघु उद्योग के माध्यम से अपनी आजीविका के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। विकट पैदल रास्तों से प्रवास एवं जरुरी समान को स्वयं एवम पशुओं द्वारा ढोकर इन कठिन रास्तों से अपने गन्तव्यों की ओर जाना पड़ता हैं। भौगोलिक परिस्तिथियों के अनुरूप भोटिया जनजाति के प्रवास से पशुओं की चारा समस्या का हल, औषधि (औषधीय पौधों द्वारा) एवं जीविका के जरुरी साधनों की पूर्ति भी हो जाती हैं। अभी भी प्रवास हेतु पैदल मार्गो की स्थिति संघर्षपूर्ण एवं चुनौतीपूर्ण हैं (चित्र सं.–5)। पूर्व में प्रवास हेतु घोड़े, खच्चरों, जुब्बू, गाय, बकरी के माध्यम से कुन्चा हेतु यातायात की सुविधा ली जाती थी। पैदल मार्गो का उपयोग अपने एवं पशुओं हेतु किया जाता था, जब कि गढ़वाल मण्डल की प्रवासी सड़को एवं संसाधनों की वर्तमान स्थिति में कुछ सुधार हुआ हैं। नीति एवं माणा तक सड़क सुविधा के चलते अब कुन्चा हेतु पैदल गमन नही करना पड़ता, बल्कि पशुओं को भी ट्रक के माध्यम से ले जाया जाता हैं। हालाँकि कई लोग अभी भी पैदल मार्ग को सिर्फ अपनी आर्थिक स्थिति ठीक नही होने के चलते, नही अपना पाते इसी प्रकार कुमाऊ मण्डल में सड़को एवं संसाधनों की उचित व्यवस्था गढवाल मण्डल की अपेक्षा कम हैं। चौदास घाटी में और दारमा घाटी में सड़क एवं यातायात की सुविधा उपलब्ध हैं, परन्तु ब्यास घाटी में अभी भी सड़क मार्ग का कार्य प्रगति पर हैं। इस घाटी के लोंगो के द्वारा अभी भी अपने एवं पशुओं के लिए पैदल मार्ग को ही प्राथमिकता दी जाती हैं। दोनों प्रवासों स्थलों में आदिम जीवन यापन एवं आर्थिकी (कृषि, उद्योग, भेड़ पालन, गाय पालन, हस्तशिल्प, पर्यटन इत्यादि) की उपलब्धता का समुचित संसाधन ये जनजातियाँ जुटा लेती हैं।

चित्र सं.-4

चित्र सं.-5

सीमान्त पर्वतीय क्षेत्र से तिब्बत, चीन, नेपाल एवं अन्य देशो के सीमा से लगे होने के साथ यह सुदूरवर्ती क्षेत्र में आदिम जीवनयापन कर रहें हैं। उत्तराखंड भोटिया जनजाति एक वैभवशाली संस्कृति का प्रतीक हैं। ऐसी संस्कृति जिसने भोटिया समाज को क्षेत्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान अपने प्रवास, परिधान, संस्कृति, परम्परा एवं खानपान के रूप में आछादित हैं। इस समाज में इक्क्स्वी सदी के इस उत्तरार्द्ध में, शीतकालीन प्रवास हेतु गर्म स्थानों एवं ग्रीष्मकालीन प्रवास हेतु ठंडे स्थानों में, आर्थिक उदारीकरण एवं सूचना प्रोद्योगिकी क्रांति के मध्य जबरदस्त प्रतिस्पर्धा के बाबजूद, भोटिया समाज की संस्कृति हमें अपने वास्तविक अस्तित्त्व का बोध कराती हैं (चित्र स०– 6)।

चित्र सं.-6

इन भोटिया जन जातियों द्वारा अपने समाज को संरक्षित एवं प्रगति की दृष्टी से समाज हित के लिए गावों में आर्थिक रूप से शुभ शादी, समारोह में गाँव हेतु हर परिवार को गाँव हेतु न्यूनतम राशि जमा करने, इस उद्देश्य से एकत्रित की जाती हैं ताकि विकट एवं यकायक परिस्थितियों मे जरूरतमंद एवं गावं के हित हेतु सहायता मिल सके। प्रत्येक गाँव में मिलन घर की व्यवस्था के अतिरिक्त 'रं' लोंगो ने वर्तमान में मुख्य जिलो में भी अपने समाज हेतु 'रं मं बंग' की स्थपना पिथोरागढ़, नैनीताल (हल्द्वानी) एवं देहरादून की हैं। स्थानीय भाषा में 'रं मं बंग' का अर्थ 'रं लोगो की जमीन' से हैं, जो कि इस समाज के लोंगो के लिए ही नही बल्कि अन्य असक्षम लोंगो की पढाई, नौकरी, प्रतियोगिता एवं प्रतिकूल आकस्मिक समय की जरुरत हेतु के उदेश्यों से बनाई गई हैं। इतनी सकारात्मक सोच रखते हुए इन भोटिया समाज द्वारा सभी समाज को एक सकारत्मक धारा के साथ जोडने और अपनी परम्पराओं को संरक्षित रखने का कार्य किया जा रहा हैं। इस समाज द्वारा सकारात्मक पारम्परिक उर्जा के प्रवाह को पूरे देश में 'स्टे होम', 'पर्यटन', 'पर्यटन स्थल' के माध्यम प्रसारित किया जा रहा हैं धारचूला एवं मुनस्यारी में अपनी परम्पराओं एवं संस्कृति की विविधता के साक्षात प्रमाण संग्रालयों में स्थित हैं। पर्यटक इन संग्राहलयों में जनजातियों के विषय का अनुभव करते हैं। नीति माणा द्वारा भी देहरादून में मिलन घर बनाया गया हैं। उत्तराखंड सरकार द्वारा 'होम स्टे' का माध्यम से अन्य देशो से आए पर्यटको से परिचय एवं रोज़गार की दृष्टी से भोटिया समाज की संस्कृति को अग्रसारित एवं प्रसारित करने का महत्वपूर्ण प्रयास किया जा रहा हैं।

निष्कर्ष

इस शोध पत्र में शोध द्वारा यह अध्ययन किया गया कि उत्तराखंड में छेत्र में चमोली जिले मे 50 ग्रामों का ग्रीष्मकालीन प्रवास होता हैं और लगभग 17 ग्राम वर्ष भर एक स्थान मे रहते हैं। जिसमें ऋणी, पुर्सरी, जोशीमठ, तपोवन, औली, हेलंग, पांडुकेसर, पैंगसलधार, लाता, सुराई टोटा, माणा, जोशीमठ मलारी लाता ऋणी इत्यादि हैं जबकि कुमाऊ मण्डल में 37 ग्राम प्रवास हेतु जाते हैं और जौहार घाटी में एक स्थान पर रहने वाले 7 ग्रामों जिनमें मुनस्यारी व चौदास घाटी के पांगू, सौसा, हिमखोला, हुन्तोती, पाला, रौतो, रिमझिम इत्यादि हैं। यह भोटिया जनजाति अपनी संस्कृति, परम्पराओं के साथ साथ प्रकृति के जल, जंगल एवं जमीन से भी जुडी हैं सुख

सुविधा न भी होते हुए आज भी ये जनजातीय अपनी परम्पराओं को बचाने के लिए आज भी अपने शीतकालीन प्रवास में कैसी भी परिस्थिति क्यों न हो अपनी उपस्थिति दे कर अपने समाज की धरोहर तो रीती रिवाज, परम्पराओं एवं प्रथाओं को सजोये हुए हैं और यह सर्वविदित हैं कि परम्परा सामाजिक विरासत का वह अभोतिक अंग हैं, जो हमारे व्यवहार के स्वीकृत तरीकों का द्योतक है और जिसकी निरंतरता पीढी–दर–पीढ़ी हस्तांतरित होती है। कुछ विद्वान सामाजिक विरासत को ही परम्परा कहते हैं। परन्तु वास्तव में इन भोटिया जनजाति की परम्परा के काम करने का ढंग जैविक वंशानुक्रमण या प्राणिशास्त्रीय विरासत के तरीके से मिलता–जुलता हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मंगल चंद मीना 2019 भारत का जनजातियां इतिहास रावत प. IIBN 978.81.316.1021.3।
2. श्रीमती उत्तमा पांगती (रायपा) 2014 अमटीकर पेज 243. कुन्चा।
3. श्रीमती विद्या सोनाल 2014 अमटीकर पेज 247. कुन्चा।
4. राकेश सिह फकलियाल, शोभा रावत (2015),'सभा संस्कार–चौदास घाटी के रं शौकाओ की सांस्कृतिक विरासत एवं महत्व' इतिवित्रा Vol- 3 भाग–II, IISN 2347–1611ᒻ
5. राकेश सिंह फकलियाल, शोभा रावत (2015), जनजातीय महिलाओं की हस्तकलाः उत्तराखंड की भोटिया महिलाओं के विशेष सन्दर्भ में, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ विसुअल आर्ट स्टडीज एंड कम्युनिकेशन IISN 0975.1629।
6. राकेश सिह फकलियाल, शोभा रावत (2015), रं भारतीय समाज में महिलाओं की सामाजिक एवं शेक्षिक स्थिति, स्पंदित संस्कृति, IISBN 978.81.905934।
7. राकेश सिह फकलियाल, शोभा रावत (2015), 'यारसा गम्बू' द चेंजिंग बिसनिस सेनारियो ऑफ रं सोसाइटी, नेचर एंड साइंस 13 (6) 29–33–ISSN:1545–0740।

❖◆❖